मध्यप्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता एवं व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन

[उज्जैन एवं रतलाम जिलों के सन्दर्भ में]

* डॉ. अल्पना वैद्य

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति ने शिक्षा के सूत्रपात से ही इस मर्म को स्वीकारा है कि शिक्षा देने वाला शिक्षक अथवा गुरु एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति होता है जो आने वाली पीढ़ी को गढ़कर सभ्य, सुसंस्कृत एवं उदात्त नागरिक बनाता है। शिक्षक एवं गुरु का यह कार्य अत्यन्त पुनीत कार्य है।[1] आदिकाल का यह दर्शन आज भी भारतीय संस्कृति का अंग बना हुआ है।

प्राथमिक शिक्षा का शिक्षक नींव का पत्थर है। उसकी व्यावसायिक दक्षता व व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन बालकों व समाज के विकास हेतु किया जाना आवश्यक है ताकि समयानुकूल शिक्षकों की स्थिति ज्ञात होती रहे। इसी दृष्टिकोण को मूर्त्त रूप देने हेतु मध्यप्रदेश राज्य के परिप्रेक्ष्य में उज्जैन व रतलाम जिलों के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता एवं व्यावसायिक सन्तुष्टि के मापने की चे टा की गयी है ताकि शिक्षकों की शिक्षकीय स्थिति का संज्ञान हो सके।

पूर्व शोधकार्यों का विवरण—विदेशों व भारत में शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता व व्यावसायिक सन्तुष्टि के अध्ययन अतीत से ही होते रहे हैं, किन्तु परिवर्तित समाजिक परिप्रेक्ष्य के साथ—साथ इन अध्ययनों की आवश्यकता सामाजिक हित में होने से इनका विवरण इस प्रकार है—

1. पाल एवं घो ा (1967), 2. सिंघल (1988), 3. ाशि (1977), 4. सिंह (1989), 5. कुलसुम (1985), 6. श्रीवास्तव (1986), 7. सिन्हा एवं प्रभात (1993), 8. दीक्षित (1993), 9. रामकृ ण (1980), गोयल एवं चोपड़ा (1990), 11. नारंग (1992), 12. सुधीरा (1994), मिश्रा एवं पंडा (1996), 13. पाण्डेय (1995), 14. धूलिया (1986), 15. सरकार (1992), 16. क्षेत्रपाल (1988), 17. शर्मा (1976), 18. चक्रवर्ती (1990), 19. जैन (1993), 20. महाशब्दे (1990), 21. N.C.E.R.T. (1994), 22. N.C.E.R.T. (1995), 23. N.C.E.R.T. (1998), 24. UNESACO (1967), 25. UNESACO (1996), 26. UNESACO (1998), 27. WORLD BANK (1997), 28. डॉ. राधाकृ णन् आयोग (1948—49), 29. मुदलियार आयोग (1952—53), 30. कोठारी कमीशन (1964—65), 31. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) आदि।

समस्या का औचित्य—शिक्षकीय व्यवसाय में पूर्ण दक्षता एवं सन्तुष्टि बनी रहे ताकि शिक्षा की गुणवत्ता सतत प्रवाहमान रहे। शिक्षक पूर्ण रुचि, मनोयोग एवं समर्पण के साथ छात्रों का शैक्षणिक स्तर उदात्त बनाये रख सकें इस हेतु यह अध्ययन आवश्यक है।

उद्देश्य—1.शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता का पता लगाना। 2.शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का ज्ञान प्राप्त करना।

परिकल्पना—1. मध्यप्रदेश के उज्जैन एवं रतलाम जिलों के ग्रामीण व शहरी प्राथमिक विद्यालयीन शिक्षक अपने शिक्षकीय व्यवसाय में पूर्ण दक्ष हैं। 2. मध्यप्रदेश के उज्जैन एवं रतलाम जिलों के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयीन शिक्षक व्यावसायिक सन्तुष्टि रखते हैं।

अनुसन्धान की प्रकृति—वैज्ञानिक सर्वेक्षण

सीमाकंन— उज्जैन एवं रतलाम जिलों के शहरी व ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक—शिक्षिकाएँ।

न्यादर्श—उज्जैन एवं रतलाम जिलों में याद च्छिक न्यादर्श प्रविधि द्वारा चयनित विद्यालयों एवं शिक्षक—शिक्षिकाओं का संख्यात्मक विवरण

उपकरण —प्रश्नावली 1. Teacher Effective Scale by - Dr. Pramod Kumar & Dr. D.N. Mutha. 2. Teacher Job satisfaction Scale by - Dr. Smt. Premlata Saxena.

शोध प्रविधि—

1. व्यावसायिकता दक्षता—हेतु डॉ. प्रमोदकुमार एवं डॉ. डी.एन. मूथा द्वारा निर्मित प्रभावोत्पादक मापिनी जिसमें 68 कथन है, के माध्यम से जानकारी एकत्रित की गई। मापिनी में पाँच बिन्दु हैं—(1) पूर्णतया सहमत, (2) सहमत, (3) अनिश्चित, (4) असहमत, (5) पूर्णतया असहमत। इनके लिये भारित अंक क्रमशः 5, 4, 3, 2, 1 रखे गये जैसा कि संदर्शिका में उल्लेखित किया गया है। अंकों की गणना कर प्रदत्त रूप में जानकारी एकत्रित की गई।

2. व्यावसायिक सन्तुष्टि—डॉ. प्रेमलता सक्सेना द्वारा निर्मित कथनों की विषयवस्तु पर सहमत, अनिश्चित, असहमत बिन्दुओं की मापिनी के आधार पर एकत्रित की गई। मूल्यांकन में सकारात्मक कथन के 2 अंक, अनिश्चित का 1 अंक व असहमति का 0 अंक तथा नकारात्मक के 0 अंक, 1 अंक व 2 अंक सुनिश्चित किये गये। अंकगणना कर प्रदत्त एकत्रित किये गये।

सारणी क्र. 1

स.क्र.	जिला	ग्रामीण क्षेत्र				शहरी क्षेत्र				शहरी एवं ग्रामीण प्रा.वि.	शहरी एवं ग्रामीण पुरुष शिक्षक संख्या	शहरी एवं ग्रामीण महिला शिक्षक संख्या	कुल शिक्षक संख्या
		प्रा.वि.	शिक्षक			प्रा.वि.	शिक्षक		योग				
			पुरुष	महिला	योग		पुरुष	महिला					
1	उज्जैन	30	50	50	100	30	50	50	100	60	100	100	200
2	रतलाम	30	50	50	100	30	50	50	100	60	100	100	200
	योग	60	100	100	200	60	100	100	200	120	200	200	400

* सहायक प्राध्यापक, शिक्षा महाविद्यालय, डॉ. हरीसिंह गौड़ विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

प्रदत्तों का संचयन, सारणीयन एवं विश्लेषण–

परिकल्पना क्रमांक 1– मध्यप्रदेश के उज्जैन एवं रतलाम जिलों के ग्रामीण व शहरी प्राथमिक विद्यालयीन शिक्षक अपने शिक्षकीय व्यवसाय में पूर्ण दक्ष हैं। डॉ. प्रमोदकुमार एवं डॉ. मूथा द्वारा निर्मित शिक्षकीय प्रभावोत्पादक मापनी के आधार पर उज्जैन जिले के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता की स्थिति निम्न सारणी में इस प्रकार परिलक्षित हुई है–

सारणी क्र. 2

स्तर	ग्रामीण	शहरी
अत्यधिक प्रभावी	13%	15%
अधिक प्रभावी	13%	13%
औसत प्रभावी	15%	13%
निम्न प्रभावी	24%	21%
अत्यधिक निम्न प्रभावी	35%	38%

उक्त प्रदत्तों से ज्ञात होता है कि शहरी विद्यालयों के शिक्षकों का दक्षता स्तर ग्रामीण शिक्षकों के दक्षता स्तर से 2% अधिक है। यह स्तर लगभग सामान्यतः समान ही है। यदि निम्न एवं अत्यधिक निम्न प्रभावशीलता को सम्मिलित कर शिक्षकों की दक्षता की तुलना करें तो ग्रामीण एवं शहरी दोनों स्तरों पर 59% शिक्षक इस स्तर के अन्तर्गत आते हैं। 59% निम्नस्तरीय दक्षता होने से अपेक्षित सुधार की आवश्यकता है। उज्जैन जिले के 87% शिक्षक उच्च व्यावसायिक योग्यता रखने के बाद भी व्यावसायिक दक्षता न बनाये रख पाना चिन्तनीय तो है ही साथ ही अनुसन्धान का विषय भी है।

इसी प्रकार रतलाम जिले के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता मापी गई जिसकी स्थिति निम्न सारणी में इस प्रकार उभरी–

सारणी क्र. 3

स्तर	ग्रामीण	शहरी
अत्यधिक प्रभावी	12%	9%
अधिक प्रभावी	17%	13%
औसत प्रभावी	28%	16%
निम्न प्रभावी	12%	21%
अत्यधिक निम्न प्रभावी	31%	41%
शिक्षकीय प्रभावोत्पादकता का योग	**100%**	**100%**

विश्लेषणोपरान्त स्पष्ट है कि शहरी विद्यालय के शिक्षकों की तुलना में ग्रामीण विद्यालय के शिक्षक अत्यधिक प्रभावी स्तर में **3%** अधिक दक्षता रखते हैं। अधिक प्रभावी स्तर में भी ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षक शहरी विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में **4%** अधिक दक्ष हैं। यदि अधिक प्रभावशीलता स्तर के समन्वय को दृष्टिगत रखा जाता है तो शहरी शिक्षकों की तुलना में ग्रामीण शिक्षक लगभग **7%** अधिक दक्ष हैं। व्यापक सन्दर्भ में अधिक प्रभावी दक्षता का प्रतिशत ग्रामीण शिक्षकों में केवल **29%** एवं शहरी शिक्षकों में **22%** है। अत्यधिक प्रभावी एवं प्रभावीदक्षता रखने वाले शिक्षकों का प्रतिशत इतना न्यूनाधिक है कि उन्हें दक्षता स्तर पर प्रदर्शित कर दक्ष कहना औचित्यपूर्ण प्रतीत नहीं होता। अत्यधिक निम्न स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के **31%** एवं शहरी क्षेत्र के **41%** हैं। यदि सम्मिलित रूप में औसत निम्न एवं अत्यधिक निम्न स्तर का आकलन करें तो ग्रामीण शिक्षक **71%** तथा शहरी शिक्षक **78%** दिखाई देते हैं। दोनों क्षेत्रों के शिक्षकों की दक्षता स्तर अत्यन्त निम्न है। सुधार की अपेक्षा सुनिश्चित है। उज्जैन एवं रतलाम दोनों जिलों के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की समन्वित शैक्षणिक प्रभावोत्पादकता को देखते हैं तो परिणाम इस प्रकार उभरे हैं –

सारणी क्र. 4

स्तर	ग्रामीण	शहरी
अत्यधिक प्रभावी	12%	12%
अधिक प्रभावी	14%	11%
औसत प्रभावी	21%	16%
निम्न प्रभावी	20%	23%
अत्यधिक निम्न प्रभावी	33%	38%
शिक्षकीय प्रभावोत्पादकता का योग	**100%**	**100%**

अत्यधिक प्रभावी स्तर के अन्तर्गत ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता समान है, परन्तु अधिक प्रभावी स्तर पर ग्रामीण शिक्षक शहरी शिक्षकों की तुलना में 3% अधिक व्यवसायिक दक्षता रखते हैं। अत्यधिक निम्न प्रभावी स्तर पर ग्रामीण शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता 83% है, जबकि शहरी शिक्षकों की 38% है। यदि अत्यधिक निम्न प्रभावी एवं निम्न प्रभावी दोनों स्तरों को सम्मिलित देखा जाता है तो ग्रामीण शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता 53% है, जबकि शहरी शिक्षकों की 61% है। इस स्तर पर इतने अधिक शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षताएँ न्यून होना उपयुक्त नहीं है। दोनों जिलों में 87.5% उच्च योग्यताधारी शिक्षकों के होते हुए उनकी व्यावसायिक दक्षताओं का कम होना अनुसन्धान का विषय है।

परिकल्पना क्रमांक 2–मध्यप्रदेश के उज्जैन एवं रतलाम जिलों के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयीन शिक्षक व्यावसायिक सन्तुष्टि रखते हैं। डॉ. प्रेमलता सक्सेना के विश्लेषण के आधार पर यदि उज्जैन जिले के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि को वर्गीकृत किया जाता है तो प्राप्त परिणाम निम्न सारणी में इस प्रकार परिलक्षित होते हैं–

सारणी क्र. 5

स्तर	ग्रामीण	शहरी
उदात्त सन्तुष्टि	7%	5%
उच्च सन्तुष्टि	25%	18%
सामान्य सन्तुष्टि	39%	35%
न्यून सन्तुष्टि	23%	24%
न्यूनतम सन्तुष्टि	6%	18%
सन्तुष्टि योग	**100%**	**100%**

उक्त सारणी स्पष्ट करती है कि ग्रामीण क्षेत्र के 32% एवं शहरी क्षेत्र के 23% शिक्षक ही वस्तुतः उदात्त एवं उच्च व्यावसायिक सन्तुष्टि रखते हैं, जबकि शेष सभी शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि सामान्य अथवा न्यूनतम स्तर की है। गाँव के 68% एवं शहर के 77% शिक्षक व्यावसायिक सन्तुष्टि नहीं रखते। वे काम को करने की बजाय उसे टालना पसन्द करते

हैं। छात्र हित में ऐसा करना अत्यन्त घातक है। रतलाम जिले के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन करने पर जो परिणाम मिले हैं, उनका सिंहावलोकन निम्नांकित सारिणी में इस प्रकार है–

सारणी क्र. 6

स्तर	ग्रामीण	शहरी
उदात्त सन्तुष्टि	8%	7%
उच्च सन्तुष्टि	22%	16%
सामान्य सन्तुष्टि	40%	31%
न्यून सन्तुष्टि	22%	28%
न्यूनतम सन्तुष्टि	8 %	18%
सन्तुष्टि योग	**100%**	**100%**

उदात्त प्रदत्तों में ग्रामीण शिक्षक 30% तथा शहरी शिक्षक 23% उदात्त एवं उच्च व्यावसायिक सन्तुष्टि लिए हुए हैं। शेष शिक्षकों की सन्तुष्टि सामान्य(Intermediate) न्यून एवं न्यूनतम स्तर की है। ग्रामीण क्षेत्र में यह प्रतिशत 70% तथा शहरी क्षेत्र में 77% है। 7% का यह अन्तर शहरी शिक्षकों की ग्रामीण शिक्षकों की तुलना में अधिक व्यावसायिक असन्तुष्टि दर्शाते हैं, परन्तु समग्र रूप से विश्लेषण किया जाये तो 70% से ज्यादा शिक्षकों ने शिक्षकीय व्यवसाय के प्रति असन्तुष्टि प्रदर्शित की है। इतना अधिक असन्तोष निश्चित ही चिन्तनीय है।

उज्जैन एवं रतलाम जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन डॉ. सक्सेना के परीक्षण स्तरीकरण के आधार पर किया जाने से जो परिणाम प्राप्त हुए हैं, वे इस सारणी द्वारा इस प्रकार प्रस्तुत हैं–

सारणी क्र. 7

स्तर	ग्रामीण	शहरी
उदात्त सन्तुष्टि	7.5%	6 %
उच्च सन्तुष्टि	26%	18%
सामान्य सन्तुष्टि	37.5%	31%
न्यून सन्तुष्टि	22%	27%
न्यूनतम सन्तुष्टि	7 %	18%
सन्तुष्टि योग	**100%**	**100%**

उक्त सारणी से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के 33.5% एवं शहरी क्षेत्र के 24% शिक्षक उदात्त एवं उच्च व्यावसायिक सन्तुष्टि रखते हैं। अर्थात् शहरी क्षेत्र के 76% शिक्षक निम्न सन्तुष्टि रखते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्र के 66.5% शिक्षक। ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों के शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अन्तर देखने से यह 9.5% है अर्थात् ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में शहरी क्षेत्र के 9.5% अधिक व्यावसायिक असन्तुष्टि रखते हैं। सम्मिलित रूप से चिन्तन करने पर यह असन्तुष्टि 71% परिलक्षित होती है।

निष्कर्ष–1. उज्जैन जिले के ग्रामीण प्रा.वि. के शिक्षक 26% एवं शहरी प्रा.वि. के 28% शिक्षक अधिक प्रभावी एवं उच्च दक्षता स्तर पर हैं। 2. उज्जैन जिले के ग्रामीण प्रा.वि. के 74% तथा शहरी प्रा.वि. के 72% शिक्षक औसत एवं उससे निम्न दक्षता स्तर पर हैं। 3. रतलाम जिले के ग्रामीण प्रा.वि. के 29% एवं शहरी प्रा.वि. के 22% शिक्षक अधिक प्रभावी एवं उच्च दक्षता स्तर पर हैं। 4. रतलाम जिले के ग्रामीण प्रा.वि. के 71% एवं शहरी प्रा.वि. के 78% शिक्षक औसत एवं उससे निम्न स्तर पर हैं। 5. रतलाम एवं उज्जैन दोनों जिलों के ग्रामीण प्रा.वि. के 27.5% एवं शहरी प्रा.वि. के 25% शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता उच्च स्तरीय है। 6. रतलाम एवं उज्जैन दोनों जिलों के ग्रामीण प्रा.वि. के 72.5% शिक्षक एवं शहरी प्रा.वि. के 75% शिक्षक औसत एवं उससे निम्न दक्षता स्तर पर है। 7. उज्जैन एवं रतलाम दोनों जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत 71% शिक्षक तथा शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत 55% शिक्षक सामान्य, उच्च एवं उदात्त व्यावसायिक सन्तुष्टि रखते हैं, जबकि 29% ग्रामीण एवं 45% शहरी शिक्षक न्यून एवं न्यूनतम व्यावसायिक सन्तुष्टि रखते हैं।

सुझाव–1. व्यावसायिक दक्षता अभिवृद्धि हेतु वर्ष में कम से कम एक बार पाठ्यक्रम में पढ़ाये जाने वाले विषयों को पुनः सम्बन्धित विषय शिक्षक को विषय सम्बन्धी जानकारी देकर ज्ञान अभिवृद्धि की जानी चाहिए ताकि व्यावसायिक दक्षता स्वयंमेंव अभिव द्ध हो सके। 2. अनुसन्धानित नवीनता से सभी शिक्षकों को विज्ञ कराया जाना चाहिये। नवाचार कार्यक्रमों के माध्यमों से शिक्षकों का उन्मुखीकरण करना उनकी व्यावसायिक दक्षता को परि कृत करना होगा। 3. विद्यालय सम्बन्धी कठिनाईयों एवं प्रशासनिक जटिलताओं की भी खुली चर्चा होनी चाहिये ताकि दक्षता सम्बन्धी अवरोधों पर विराम लगाया जा सके। 4. व्यावसायिक सन्तुष्टि हेतु समय–समय पर शिक्षकों के वेतन, मँहगाई–भत्ते, चिकित्सा राशि आदि भी बढ़ती रहनी चाहिये ताकि शिक्षकों को उनके व्यवसाय में सन्तो ा मिल सके। 5. ग्रामीण शिक्षकों को ग्रामीण भत्ता, भवन सुविधा आदि दी जानी चाहिये ताकि उनमें व्यावसायिक असन्तो ा उत्पन्न न हो। 6. आदिवासी क्षेत्रों में कार्य करने वाले शिक्षकों को आदिवासी क्षेत्र भत्ता, भवन सुविधाएँ, वर्ष में एक बार घर आने–जाने के सपरिवार किराये की राशि आदि दी जानी चाहिए ताकि उन्हें उनके व्यवसाय में संतोष मिल सके।

सन्दर्भ–1. पदम कुमारी – 'समाज मनोविज्ञान', प्रकाशन–हिन्दी प्रिन्टिंग प्रेस, क्वीन रोड, नयी दिल्ली 2. पी.डी. पाठक एवं जी.एस.डी. त्यागी – 'भारतीय शिक्षा आयोग', प्रकाशन – मेंरठ पब्लिकेशन, मेंरठ, 1970 3. जे.पी. नायक – 'एप्लीमेंण्ट्री एज्यूकेशन इन इण्डिया', प्रकाशन–एशिया पब्लिकेशन हाऊस, बाम्बे, नयी दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास, लन्दन, न्यूयार्क, 1965 4. पी.पी. जौहरी एवं पी.डी. पाठक –'भारतीय शिक्षा का इतिहास', प्रकाशन – अमीनाबाद, लखनऊ, 1972 5. जे.सी. अग्रवाल – 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986', प्रकाशन – दोआवा हाऊस, नयी सड़क, नयी